بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-10.05.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अबू सलमा रज़ी. नामक युद्ध, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ी. तथा रजीअ नामक युद्ध की रौशनी में आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन परिचय का ईमान वर्धक वर्णन तथा आसीराने राहे मौला और फ़लिस्तीन के पीड़ितों के लिए दुआ की तहरीक।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 10 मई 2024. स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने के कुछ युद्धों का वर्णन करूँगा। इस विषय में पहले बनू असद नामक क़बीले की शरारत तथा अबू सलमा रज़ी. नामक युद्ध का वर्णन होगा। सिरया उसको कहते हैं जिसमें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शरीक नहीं होते थे परन्तु आप स. दूसरों को अभियान में भेजा करते थे। इनमें भी आप स. की सीरत के कुछ आयाम, आप स. की हिकमत, मुसलमानों के बचाव की रीति तथा दुशमन के लिए सहानुभूति की अभिव्यक्ति तथा आप स. के सुन्दर आचरण पर रौशनी पड़ती है।

अबू सलमा नामक अभियान मुहर्रम 4 हिजरी में आप स. के फुफेरे भाई तथा हज़रत हमज़ा रज़ी. के रज़ाई भाई (दो अलग परिवारों के बच्चे जिन्होंने ने एक ही महिला का दूध पिया हो) हज़रत अबू सलमा रज़ी. बिन अब्दुल असद मख़ज़ूमी के नेतृत्व में हुआ जो बदर की लड़ाई तथा ओहद के युद्ध में शामिल थे। इस युद्ध की पृष्ठभूमि कुछ यूँ है कि ओहद की लड़ाई के हालात एवं घटनाओं के कारण मदीने में रहने वाले मुनाफ़िक़, यहूदी तथा मदीने के आस पास रहने वाले क़बीलों के दिलों में भी ये विचार आने लगे कि मुसलमानों को जल्दी नष्ट करने की योजना की जा सकती है। अतः सबसे पहले क़बीला बनू असद बिन ख़ज़ीमा ने मुसलमानों पर हमले की योजना बनाई। उस क़बीले के सरदार तुलैहा बिन ख़्वेलद तथा उसके भाई सलमा ने लोगों को एकत्र

करके एक सेना संगठित कर ली। बनू असद के एक आदमी क़ैस बिन हारसा बिन उमैर ने अपनी क़ौम को मुसलमों पर हमला न करने की नसीहत की। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब इस हमले की सूचना मिली तो आप स. ने फैसला किया कि उनके हमल से पहले ही स्वयं मुसलमान अपनो सुरक्षा के लिए उनके इलाक़े पर चढ़ाई करें। अतएव आप स. ने 150 सहाबियों रज़ी. का एक सैन्य दल उन क़बीलों को ध्वस्त करने के लिए रवाना कर दिया।

यह सेना अपने अभियान को गुप्त रखते हुए चार दिन की यात्रा के बाद क़तन नामक पहाड़ के निकट बनू असद बिन ख़ज़ीमा के चश्मे (जल स्रोत) पर पहुंच गई तथा वहाँ पहुंचते ही हमला करके उनके पशुओं पर क़ब्ज़ा कर लिया तथा उनके चरवाहां में से तीन को पकड़ लिया तथा शेष चरवाहे भाग निकले। उन भागने वालों ने बनू असद को हमले की सूचना देते हुए अत्यधिक बढ़ा चढ़ा कर शंका चताई तथा मुसलमानों की सेना की संख्या भी बहुत बढ़ा चढ़ा कर बयान की, जिससे बनू असद भयभीत हो गए तथा इधर उधर भाग गए। हज़रत अबू सलमा रज़ी. ने उनकी खोज में अपने साथियों को भेजा परन्तु मुसलमानों का किसी से भी सामना न हुआ। आप रज़ी. ने पूरे माले ग़नीमत में से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए उनका निश्चित पांचवाँ भाग अलग किया तथा शेष माले ग़नीमत सहाबा किराम रज़ी. में बाँट दिया। हज़रत अबू सलमा रज़ी. के निधन के विषय में लिखा है कि वे जब मदीना वापस आए तो ओहद के युद्ध में उनक लगने वाला घाव फिर से हरा हो गया, जिसके कारण वे बीमार पड़ गए और उसी साल 3 जमादिल आख़िर नामक महोन म उनकी मृत्यु हो गई।

बनू असद के सरदार तुलैहा बिन ख़्वेलद, जिसका वर्णन हुआ है, बाद में मुसलमान हो गया परन्तु फिर पलट गया बल्कि उसने नबुव्वत का झूटा दावा करके उपद्रव एवं अशांति फैलाई। परन्तु पराजित होकर अरब से भाग गया और फिर कुछ अवधि के पश्चात तौबा करके इस्लामी युद्धों में भाग लेकर अपने बहादुरी के जौहर दिखलाए तथा 21 हिजरी में एक युद्ध में शहादत का सौभाग्य प्राप्त किया। अल्लाह तआला ने उसका अन्त कल्याणकारी करना था तो उसको सामर्थ्य मिला एवं उसने इस्लाम क़बूल कर लिया।

फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ी. के नाम से एक युद्ध का वर्णन है। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी. बैअते उक़बा द्वित्तीय, बदर, ओहद तथा अन्य युद्धों में शामिल हुए। उन्होंने शाम देश में 54 हिजरी अथवा कुछ रिवायतों के अनुसार 74 हिजरी में वफ़ात पाई। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने मुहर्रम 4 हिजरी में इस अभियान के वर्णन में लिखा है कि क़ुरैश की भड़ाऊ बातें तथा ओहद में मुसलमानों की अस्थाई पराज्य अब अत्यंत तेज़ी के साथ अपने भयावह परिणाम प्रकट कर रही थी। अतः उन्हीं दिनों में, जिनमें बनू असद ने मदीना पर छापा मारने की तय्यारी की थी, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सूचना मिली कि बनू लहयान नामक क़बीले के लोग अपने सरदार सुफ़यान बिन ख़ालिद के उकसाने पर अपने देश उर्ना में जो मक्का के निकट एक स्थान था, एक बड़ी सेना संगठित कर रहे हैं तथा उनका इरादा मदीने पर हमला करने का है।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने, जो एक कुशल अवसर का पहचानन वाल थ एवं अरब के विभिन्न क़बीलों की स्थिति तथा उनके सरदारों के प्रभाव एवं शक्ति से पूर्णतः परिचित थे, इस सूचना के मिलते ही समझ लिया कि यह सारी शरारत तथा उपद्रव बनू लहयान के सरदार सुफ़यान बिन ख़ालिद का है तथा यदि

इसका अस्तित्व बीच में न रहे तो बनू लहयान मदीने पर हमला करने का साहस नहीं कर सकते। आप स. यह भी जानते थे कि सुफ़यान के बिना इस क़बीले का वर्तमान में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो इस प्रकार के अभियान का लीडर बन सके। अतएव आप स. ने सैन्य दल भेजने से मुसलमानों के दुविधा में पड़ने तथा देश में अधिक रक्तपात का द्वार खुलने की आशंका को सामने रखते हुए यह निर्णय किया कि कोई एक व्यक्ति चला जाए तथा अवसर मिलते ही इस उपद्रव क मूल प्रेरक तथा इस शरारत की जड़ सुफ़यान बिन ख़ालिद की हत्या कर दे। अतएव आप स. ने इस उद्देश्य के लिए अब्दुल्लाह बिन उनैस अन्सारी रज़ी. को रवाना फ़रमाया। अतः अब्दुल्लाह बिन उनैस अत्यंत सावधानी के साथ बनू लहयान के कैम्प में पहुंचे जो वास्तव में मदीने पर हमला करने की तय्यारी में अत्यंत दौड़ धूप में व्यस्त थे तथा रात के समय अवसर मिलते ही सुफ़यान की हत्या कर दी। बनू लहयान को इसकी सूचना मिली तो उन्होंने अब्दुल्लाह का पीछा किया, परन्तु वे छिपते छिपाते हुए बच निकल आए।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने जब अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ी. आए तो आप स. ने उनकी शकल देखते ही पहचान लिया कि वे सफल होकर आए हैं। अतएव आप स. ने उन्हें देखते ही फ़रमाया-اَفْلَحَ الْوَجْهُ कि चेहरा तो सफल नज़र आता है। अब्दुल्लाह ने निवेदन पूर्वक कहा तथा क्या ख़ूब कहा-اَفْلَحَ الْوَجْهُكَ يَارَسُوْلَ اللهِ अर्थात या रसूलुल्लाह स, सारी सफलता आप स. की है। उस समय आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने हाथ का असा (लाठी) अब्दुल्लाह रज़ी. को पुरस्कार के रूप में प्रदान किया तथा फ़रमाया कि यह असा तुम्हें जन्नत में टेक लगाने का काम देगा। अब्दुल्लाह रज़ी. ने यह मुबारक असा अत्यंत प्रेम एवं निष्ठा स अपने पास रख लिया तथा मरते हुए वसीयत कर दी कि उसे उनके साथ दफ़न कर दिया जाए, अतएव ऐसा ही किया गया।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस ख़ुशी से जिसकी अभिव्यक्ति आप स. ने अब्दुल्लाह रज़ी. की सफलता पूर्वक वापसी पर फ़रमाई तथा उस पुरस्कार से जो उन्हें बहुमुल्य रूप में प्रदान किया गया, यह पता चलता है कि आप स. सुफ़यान बिन ख़ालिद के उपद्रव को अत्यंत हानि कारक मानते थे तथा उसकी हत्या को सामान्य शांति के लिए एक दया पूर्ण कृत समझते थे। आप स. पर दुश्मन आरोप लगाते हैं कि नऊज़ुबिल्लाह, आप स. ने शांति भंग की तथा मानव रक्तपात करवाया। आप स. के विचार में तो इंसान की जान का मूल्य ऐसा है कि दुश्मन क़बीले के लोगों की जान बचाने के लिए यह युक्ति निकाली कि एक जान की हत्या अच्छी है, ताकि उनके शष लोग बच जाएँ। यह इंसान की सहानुभूति की चरम सीमा है। आजकल की तथाकथित दुनिया कुछ लोगों की हत्या करने के बहाने निर्दोष बच्चों, महिलाओं तथा बूढ़ों की हत्या कर रहो है तथा बड़ी डठाई से कहते हैं कि यह तो युद्ध में होता है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यथावत युद्धों में भी यह आदेश फ़रमाते थे कि किसी बच्चे, बूढ़े एवं धार्मिक व्यक्ति को जो सीधे रूप में युद्ध में सम्मिलित न हो, उसकी हत्या नहीं करनी। अतः यह है नैतिक आचरण मुहम्मद स, तथा इस्लाम की शिक्षा।

इसके बाद हुज़ूरे अनवर ने रजीअ नामक अभियान का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि इसका वर्णन लम्बा है, इस लिए आज कुछ भाग पेश करूँगा। यह अभियान सिफ़र 4 हिजरी के शुरु में रजीअ नामक स्थान की ओर पेश आया। हमारे अनुसधान विभाग ने रजीअ नामक अभियान के विषय में एक नोट दिया है तथा जो इस

हवाले से ध्यान देने योग्य है कि कुछ इतिहासकारा म इसके माध्यम से अन्तर नज़र आता है। अधिकांश जीवन परिचय लेखक रजीअ नामक अभियान का समय सिफ़र 4 हिजरी लिखते हैं तथा इसका विवरण इस प्रकार बयान किया जाता है कि हज़रत ख़ुबैब रज़ी. तथा हज़रत ज़ैद रज़ी. को मक्के में बेच दिया गया परन्तु हुर्मत वाले महीने (अरब की प्रथानुसार शांति के चार महीने) समाप्त हो गए तो उन दोनों की हत्या कर दी गई। यदि यह अभियान 4 हिजरी का मान लिया जाए तो फिर यह कहना कि हुर्मत वाले महीने शुरु हो चुके थे, यह तर्कसंगत नहीं है। इस लिए अधिक सटीक बात यही लगती है कि यह अभियान 3 हिजरी शव्वाल के अन्तिम दिनों में हुआ। चूँकि सिफ़र 4 हिजरी में हज़रत ख़ुबैब रज़ी. और हज़रत ज़ैद रज़ी. को शहीद किया गया था तथा जब उनकी शहादत की सूचना मदीने पहुंची तो रिवायतों में यह तिथि अर्थात 4 हिजरी धीरे धीरे ग़ालिब आ गई, अतएव अल्लाह बेहतर जानता है।

इस अभियान के बारे में लिखा है कि बनू लहयान क सरदार की हत्या के कारण यह क़बीला बदला लेने की आग में भड़क रहा था तथा मुसलमानों से बदला लेने की योजना के बारे में सोच रहा था। अतः एक योजनाबन्दी के साथ क़बीला अज़्ल तथा क़बीला क़ारा के कुछ लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तथा कहने लगे कि हमारे क़बीले में इस्लाम की बड़ी ख्याति है, अतः आप अपने कुछ लोग हमारे साथ रवाना कर दें जो कि वहाँ इस्लाम की दावत का काम करें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके साथ आदमी भेजे थे। सीरत को अधिकांश पुस्तकों में 10 सहाबियों का वर्णन है परन्तु नाम केवल 7 सहाबियों के मिलते हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आसिम बिन साबित रज़ी. को अथवा मुर्सद बिन अबी मुर्सद को अमीर बनाया, फिर आगे की घटनाएँ हैं जो इन्शाअल्लाह आगे बयान करूँगा।

जुम्अः के ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने दुआ की तहरीक करते हुए फ़रमाया- आज मैं फिर यमन के असीरों के लिए विशेष रूप से दुआ के लिए कहना चाहता हूँ, विशेषतः उन महिला के लिए जो वहाँ की सदर लजना भी हैं, उनको बड़ी कठिनाई में रखा हुआ है, बन्दी बनाकर रखा हुआ है तथा कुछ अन्य भी हैं जो उनकी बात मानने को तय्यार नहीं, उनको भी बन्दी बनाया हुआ है। उनके लिए विशेष रूप से दुआ करें कि अल्लाह तआला उनकी रिहाई के सामान पैदा फ़रमाए।

पाकिस्तान के असीरों की रिहाई के लिए भी दुआ करें। फ़लिस्तीन के लोगों के लिए भी दुआ करते रहें, हालात लगता है कि बेहतर हो रहे हैं, फिर ख़राब हो जाते हैं। इसराईल की सरकार डिठाई से काम ले रही है, अल्लाह तआला उनको इस अत्याचार से जल्दी मुक्ति दिलवाए तथा मुसलमानों को भी अपना हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131